26 वां विचार मंथन : प्रकृति विरोधी विकास की होड़ और दुनिया पर गहराते संकट के बादल

ब्यावरा. बाबूजी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन करते हुए अतिथिगण.

ब्यावरा. आयोजन में अंचल से बड़ी तादाद में श्रोताओं ने अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराई.

ब्यावरा. मंचासीन वक्तागण और वरिष्ठ जनप्रतिनिधि.

हमारा असली भगवान पर्वतों, मिट्टी, पानी, धरती में है. इस असल रूप को जानते थे तब हमारे आचरण में सुधार था. पर्यावरण के प्रति लापरवाही से होने वाला विनाश का कहर सबको बराबरी के साथ नुकसान पहुचाता है. हमें न्यूनतम आवश्यकता, विलासिता मुक्त प्रवृति रखना होगी जिससे पर्यावरण की मदद हो सके. मनुष्य को अपने र्माग का सिंघावलोकन करने की जरूरत है. कुछ इस प्रकार के विचार व्याख्यान में आए है. इनके संपादित अंश प्रस्तुत है.

–गोविन्द बड़ोने

विनाश को रोकना है तो प्रकृति में भगवान देखना होगा

हम पंचमहाभूतों को ही भगवान् मानते हैं. भगवान् शब्द को वैदिक काल में भारतीय जीवन पद्धति के व्यवहार व संस्कार से जोड़ते हुए आपने कहा कि भगवान का अर्थ, भ-भूमि, ग-गगन, व-वायु, अ-अग्नि और न-नीर बताया. यही हमारा चिंतन था लेकिन आज हमने ऐसा मानने से चूक की तो हमारी चिंता बड़ गई है.

जब हम पंचमहाभूतों से बनने वाला भगवान को मानते थे तो वह भाव सभी को रक्षित, संवरक्षित करता है. आज हमें भगवान प्रकृति में नहीं पत्थरों में दिखता है. हमारा असली भगवान पर्वतों, मिट्टी, पानी, धरती में है. उस समय ऋषि मुनियों के माध्यम से हम असली भगवान को जानते थे. तब हमारे आचरण में बहुत बड़ी गहराई थी. प्रकृति का काम भगवान का काम मानना पड़ेगा.

जब तक हम भगवान को पहचानते थे तब तक नीर, नारी और नदी को नारायण मानकर खूब सम्मान करते थे. आदमी की जरूरत और पर्यावरण की संवेदनाओं में बराबर समझ रखने वाली तकनीकि विकास करती है. सनातन विकास अथार्थ सदैव, नित्य, नूतन निर्माण होते रहना. न इसका आदि है न अंत है. बराबर चलता रहता है. जो बिना बिगाड़े, बिना क्षति पहुंचाएं चलता रहे. आज का विकास सबसे पहले ज्ञान का विस्थापन करता है फिर धरती से हरियाली, फिर मिट्टी, लोगो का विस्थापन करता है. फिर विनाश होता है. इससे दूर हमे सम रूपी सनातनी विकास के रास्तें पर चलना पड़ेगा.

जब हम परिवेश के चारों तरफ सीख लेते है तो वह बुनियादी होती है और खर्चीली नहीं होती है. किताबों की बातों पर अधिक नहीं विकास अनुभव को महत्व देना होगा. विज्ञान और अनुभव के आधार पर चलेंगे तो हम प्रकृति के साथ न्याय कर पायेंगे. ज्ञान तंत्र में भारतीय आस्था पर्यावरण की रक्षा करती थी, प्रकृति से प्यार करती थी. जब से शिक्षा आई है तब से उसने प्रकृति को काट दिया है. जब हम भारतीय ज्ञान तंत्र को अच्छे समझते है तो हमारे व्यवहार में बराबरी का भाव आता है. भारत को दुबारा से प्रकृति के प्रेम और पर्यावरण की रक्षा की आस्था को पुर्नजीवित करना है तो शिक्षा के ऊपर विद्या को बैठाना पड़ेगा.

मैंकाले ने जब शिक्षा शुरू की तब 7 लाख से अधिक गुरूकुल थे. जिन्हें समाज चलाता था. शिक्षा आज व्यापार हो गया है. शिक्षा लाभ की चिंता करने लगी इसका दुष्परिणाम समाज भुगत रहा है. जबकि वैदिक काल में विद्या प्रमुख थी. विद्या लाभ से दूर शुभ के अनुकूल रहती थी. शिक्षा के ऊपर विद्याा को बैठाने से शुभ का प्रभाव पूर्व की तरह दिखाई देने लगेगा. पहले व्यापार में मूल चरित्र शुभ -लाभ था. आज लाभ को ही शुभ मान लिया गया है. इसका प्रभाव ही प्रकृति को क्षति पहुंचा रहा है.

प्रकृति विरूद्ध विकास ने जन-धन हानि बढ़ाई

प्रकृति के प्रति अनदेखी और विकास के नाम पर हो रहे विनाश के कामों ने जन-धन हानि में वृद्धि की है. पुराने दौर में बाढ़-सुखाड़ की मार देश के समस्त भू-भाग और प्रमुख प्रदेशो पर मात्र चार प्रतिशत थी. आज यह आंकड़ा कई गुना बढ़ गया है. इस वर्ष भारत के 17 राज्यों में बाढ़ आई है.आजादी के पूर्व और आजादी के बाद की स्थिति में अर्थात पिछले 75 वर्षो में स्थिति काफी बदली है. बाढ़-सुखाड़ का प्रभाव हमारी आर्थिक स्थिति, परिस्थिति को और पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है. इस स्थिति को संभालना है तो हम सबको मिलकर प्रकृति के प्रति प्रेम को बढ़ाना होगा.

गंभीर, वरिष्ठ नेता हो प्रदेश और देश का पर्यावरण मंत्री

पर्यावरण और प्रकृति के प्रति सरकारों को गंभीर होना पड़ेगा. राज्य हो या केन्द्र सभी जगह पर्यावरण मंत्रालय ऐसे व्यक्ति को देना चाहिए जो गंभीर, वरिष्ठ और अनुभवी हो. इसके साथ ही वह बिना किसी पक्षपात के कार्य करने का आदि हो. जो सभी का सम्मान करें और दलगत भावना से ऊपर उठकर कार्य करें और पक्षपाती न हो.

सरकारें किसी भी दल की हो लेकिन वह पक्ष-विपक्ष की बात सुने वह सबकी बात सुने और सब उसे सुना सके और प्रकृति के अनुकूल निर्णय ले. पर्यावरण मंत्रालय आज उद्योगो का काम कर जंगलों को नष्ट करने में कार्पोरेट को खुली छूट देने का काम कर रहा है. आज भारत के जंगल कार्पोरेट को दिये जा रहे है.पर्यावरण प्रेमी लोग सब डर कर घर बैठे है. जितना हिमालय के विकास पर खर्च किया उससे 10 गुना अधिक खर्चा दुष्परिणाम समाज को भुगतना पड़ रहा है. जंगल कटने से हिमालय का काफी नुकसान हुआ है. विकास के नाम पर लोगो को परेशानी भुगतने पर मजबूर हो रहे है. दुनिया की सारी सभ्यता का जन्म नदि के किनारे होता है.

बाबूजी की आत्मा प्रसन्नचित हो रही होगी

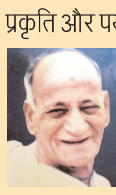

प्रकृति और पर्यावरण जैसे गंभीर और समसामयिक विषय पर संवाद का बड़ा आयोजन करने के लिये नवभारत परिवार साधुवाद का पात्र है. इस प्रकार के आयोजन से नवभारत के संस्थापक स्व. श्री रामगोपाल माहेश्वरी की आत्मा निश्चित रूप से प्रसन्नचित हो रही होगी. आपने कहा कि प्रकृति और पानी का काम किसी एक का नहीं है. इसमें जवाबदार से लेकर समाज का हर व्यक्ति अपनी नियमित भूमिका निभाएं तो खुद का जीवन बचाने का प्रयास का सकता है.

पुराने दौर की ओर लौटने होगा समाज को ज्ञान तंत्र में विद्या से, प्रकृति से बहुत प्यार था. भारतीय आस्था पर्यावरण की रक्षा करती थी, प्रकृति से प्यार करती थी. जब से शिक्षा आई है तब से उसने प्रकृति को काट दिया है. शिक्षा हमे स्वार्थी बनाती है. हमें खुदगर्ज बनाती है. केवल लाभ कमाना सिखाती है. जीवन में कैसे लाभ कमाएं यह शिक्षा सिखाती है. पैसे कमाने के सपने सिखाती है. जबकि विद्या हमें लाभ नहीं पड़ोसी के साथ आनंद से रह सके और सबके भले के लिए काम कर सके यह सिखाती है. पर्यावरण का काम लातों, बातों से नहीं प्यार से होता है. समाज तैयार हो जाता है तो हर हालात बदल जाते है. समाज को जागरूक होकर अपने पुराने दौर की ओर लौटने के लिये जुटना होगा.

डॉ राजेन्द्र सिंह,
पर्यावरणविद, अलवर राजस्थान

मनुष्य को अपने मार्ग का सिंघावलोकन करने की जरूरत : बाबूलाल दाहिया

बाबूलाल दाहिया,
वरिष्ठ साहित्यकार, सतना

हाथ से चलित उपकरणों के बजाय जैव ऊर्जा चलित यंत्रों का उपयोग करने से परिवर्तन आया है. इससे पर्यावरण ग्लोवल वार्मिंग की समस्या भी बड़ी है. पिछली शताब्दियों में बड़े-बड़े अकाल पड़े. लोग भूख से त्रस्त हुए पर प्यास से नहीं मरें. क्योंकि धरती के अन्दर जल संचित था. कृषि के दुष्परिणामों की ओर गौर करें तो पहले हमारी उस खेती का आधार मनुष्य का खुद और उसके पशु धन का श्रम हुआ करता था. जिन पशुधन को आज घर से निकाल दिया गया है उन्हे नजदीक से देखने से ऐसा लगता है कि उनसे हमारे पूर्वजों की एक अलिखित मूक सम्बिदा जैसी थी. पशुधन के माध्यम से दूध, गौबर, खाद आदि का जो चक्र चलता था वह कई प्रकार से उपयोगी और लाभदायक रहता था. गांव में 600 फीट तक का धरती का पानी खींच लेने से पीने लायक पानी के लिये मीलों भटकना पड़ता है. क्योंकि एक क्विंटल हाइब्रिड किस्म का गेहूं उगाकर बाहर भेजने का अर्थ होता है गांव का एक लाख लीटर पानी बाहर भेजना. ऐसे में गांव में समस्याओं का संकट बढ़ने से नई पीढ़ि ने शहरों में बसना शुरू कर दिया. गांव में मात्र 65-70 वर्ष के बूढ़े बसते हैं बाकी कोई नही. क्योंकि इस विकास बाद की अंधी दौड़ ने उन्हें गांव में रहने लायक छोड़ा ही नहीं. जिस विकास वाद की अंधी दौड़ में लोग शामिल हैं उसका जीवन काल 2 सौ वर्षों से अधिक नही दिखता. परन्तु मनुष्य की एक संस्कृति धरती में अवश्य है जिनके जीवन शैली में जीव जगत के लाखों वर्षो तक जीवित बने रहने की अवधारणा छिपी है. वह है आदिवासी समुदाय की संस्कृति. आदिवासी कहीं का हो उसकी धरती के सीमित संसाधनों के उपयोग की एक ही जीवन शैली है जो प्राकृतिक संसाधनों को एक सामूहिक भोजन कोष समझता है. और उससे वह उतना ही लेता है जितना जीवन यापन में जरूरत है. यही कारण है कि उसकी संस्कृति में गीत संगीत, पूजा उपासना से लेकर आखेट तक में सामूहिकता है. क्योंकि वह प्राकृतिक संसाधनों को सामूहिक भोजन कोष समझता है. किसी गांव में अगर 250 आदिवासी परिवार भी बसे हैं तब भी किराना या विकास खाना की दुकान किसी गैर आदिवासी की ही होगी, आदिवासी की नहीं. क्योंकि उसकी संस्कृति में संचय और व्यापार है ही नहीं. तभी तो जहां -जहां घना जंगल वहां आदिवासी और जहां आदिवासी वहीं घना जंगल है. जहां अन्य लोगों का पदार्पण हुआ तो जंगल साफ. इसलिए इन प्रकृति के सच्चे संरक्षकों से शिक्षा लेने की भी आवश्यकता है. हिंदी का एक शब्द है सिंघावलोकन, कहते हैं जब बाघ जंगल में अकेले विचरण करता है तो कुछ दूर चलता है और फिर मुड़कर देखता है कि आगे पीछे कहीं कोई खतरा तो नही है.

सनद रहे, प्रकृति का रौद्र रूप अमीरी, गरीबी नहीं देखता

जय नागड़ा,
वरिष्ठ पत्रकार, खण्डवा

हमारी अनदेखी, लापरवाही और ज्यादती का परिणाम है कि प्राकृतिक आपदाओं में बढ़ोत्तरी हुई है. हिमालय में तो हमने विनाशकारी रूप देखा है. जो प्रकृति का दौहन कर क्षति पहुंचा रहे है और प्रकृति विरूद्ध विकास की होड़ में लगे है उन्हें यह जान लेना चाहिए कि प्रकृति की सजा चेहरा देख कर नहीं मिलती है. इस विनाश से प्रभावशाली, विशिष्ट और हर जाति धर्म के लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रहते है. प्रकृति का जब कहर बरसता है तो वह सबको बराबरी के साथ नुकसान पहुचाता है प्रकृति देती भी उदारभाव से है और कुपित होती है तो रूह कंपा देने वाली सजा देती है. हमारा दुर्भाग्य है कि हम संकट के समय चर्चा करते है और फिर भूल जाते है. गर्मी में हमें जल संकट याद आता है और बारिश में हमें नदी-नाले याद आते है. बाकी समय हम लोग निश्चिंत हो जाते हैं बड़े शहरों में ऐसा अधिक होता है. लेकिन ब्यावरा जैसे छोटे शहर में अगर पर्यावरण को लेकर चिंता जताने वाले भारी संख्या में लोग इस कार्यक्रम में जमा है तो यह मानना चाहिए कि परिवर्तन की बयार यहीं से निकलेगी. हमें उन बड़े शहरों से उम्मींद नहीं करना चाहिए जो खुद भटके नजर आते है. छोटे शहरों में ही अभी वो संस्कार बचे हैं, वो चिंताएं बची है जो मानव जाति को विनाश की ओर जाने पर बचाने के लिये आगह करती है. इसी से कहीं न कही देश को राह मिलेगी. परिवरण की चिंता किसी एक व्यक्ति, सरकारों की नहीं है. जो जितना बड़ा जितना शक्ति शाली है वह पर्यावरण का उतना ही बड़ा नुकसान पहुंचा रहा है. सरकारें चूंकि ज्यादा पावरफुल है तो स्वभाविक ही है कि वह सबसे ज्यादा क्षति पहुंचाती है. प्रकृति को रहे नुकसान से सभी अवगत है लेकिन अनदेखा करने की नीति ने सभी का नुकसान किया है. प्रकृति संरक्षण का काम सरकार और समाज का है. समाज को अपने स्तर से निजी तौर पर भी इस दिशा में प्रयासरत और जागरूक रहना चाहिए. आज अखबारों में तो थोड़ा बहुत पर्यावरण पर पढ़ा लिखा जा सकता है लेकिन टीवी ने तो सनसनीखेज खबरों में प्रकृति को कोई स्थान देने से दूरी ही बना ली है. ऐसे दौर में सिर्फ समाज और राजेन्द्र सिंह जैसे लोगो से ही परिवर्तन की उम्मींद की जा सकती है.

चिंतन का संदेश सरकार के बीच ले जाउंगा : पंवार

नारायण सिंह पंवार,
राज्यमंत्री मप्र शासन

ब्यावरा. मत्स्य विभाग एवं मछुआ पालन कल्याण विभाग राज्यमंत्री नारायण सिंह पंवार ने कहा कि दुनिया भर में ग्लोबल वार्मिंग को लेकर गोष्टियां होती है. कई देश इससे प्रभावित है लेकिन चर्चा हमारे देश में सबसे ज्यादा होती है. उन्होंने वक्ताओं के विषय में कहा कि आप सभी इस पर काम कर रहे है इसका अर्थ है कि आप व्यक्ति नहीं अपने आप में एक संस्थान है. और आप सरकार की आंखें खोलते है. आपने कहा कि व्यवसायीकरण ने पर्यावरण के सौंदर्य को बिगाड दिया. हम सभी इसके पीछे जिम्मेदार है. यह सारा संकट इसी से उत्पन्न हो रहा है. उन्होंने कहा कि जितना खो चुके है वह बहुत हुआ लेकिन अब आगे देखना होगा और इसे रोकना होगा. उन्होंने उत्तराखण्ड से आए वरिष्ठ पत्रकार हृदयेश जोशी की प्रशंसा की. उन्होंने जल के क्षेत्र में डॉ राजन्द्र सिंह एवं बाबूलाल दाहिया के विषय में कहा कि ऐसी हस्तियां यदा कदा धरती पर आती है. श्री पंवार ने कहा कि आप वक्तागण पर्यावरण चिंतन के साथ जो जीवन त्याग के साथ जी रहे है वह ऋषि मुनियों के जीवन की तरह है. हम सभी आपका दर्शन कर, आपको सुनकर धन्य हुए. श्री पंवार ने कहा कि हम सभी को इनकी बातों से सीख लेकर अपने-अपने क्षेत्र के पर्यावरण संरचनाओं को बचाने, संवारने के लिए अपने स्तर पर काम करना चाहिए. जिससे जितना हो सके. उन्होंने सभी वक्ताओं का ब्यावरा आगमन पर अपनी ओर से साधुवाद किया. उन्होंने कहा कि मैं प्रदेश सरकार में मंत्री होने के नाते आपका संदर्भ, संदेश जरूर सरकार के बीच रखूंगा.

पौधे को वृक्ष बनाने का पाथेय अपनाना होगा : सांसद

रोड़मल नागर,
सांसद, राजगढ़ लोकसभा

ब्यावरा. क्षेत्रीय सांसद रोड़मल नागर ने कहा कि डॉ राजेन्द्र जी का पाथेय है पर्यावरण, प्रकृति, विकास और विकास संस्कारित, विरासत, सांस्कृतिक, भगवान और सनातन से जोड़कर. चाहे जन हो, जंगल हो, जमीन हो, जानवर होगा, ये सभी एक दूसरे के पूरक है. हमें विकास तो चाहिए लेकिन संतुलित विकास चाहिए. आज दुनिया में जो चल रहा है. कुछ लोग ऐसे है जो व्यक्ति के बारे में विचार करते है, कुछ समाज और कुछ अपने बारे में विचार करते है. लेकिन हम ही है जो बीच में विकृत हुए. बीच में जो भूलें हुए उनको ठीक करना पड़ेगा .उनका परिमार्जन करना पड़ेगा. समभाव से व्यक्ति, समष्टि, परमेष्टि, व्यक्ति, समाज, देश और दुनिया सभी को देखना होगा. इनका तादात्म्य हो एकाकार हो. एक दूसरे की चिंता, हित जब तक नहीं साधेंगे ये विकृतिकयां बढ़ती रहेंगी. जो पौध हम लगाते है उसे भूलने के बजाय वह वृद्ध कैसे बनें इस पर विचार और चिंतन होना चाहिए. हमें इस पाथेय को ध्यान रखना होगा. इस विचार मंथन से कोई ना कोई छोटी, कम से कम समझने वाली चीज का व्यक्तिगत जीवन में आचरण, व्यवहार करें तो पर्यावरण के प्रहरी हम अपने आप बन जाएंगे. जो जानते हो उसको मानने लगो निश्चित रूप से सफलता मिल जाएगी. आज अपने क्षेत्र, देश और दुनिया की जो मूलभूत आवश्यकता है और उस आवश्यकता को समझते हुए आयोजन के विषय का निर्धारण किया है वह प्रशंसनीय है. उन्होंने कहा कि विषय को जीने वाले व्यक्ति का वक्ता के तौर पर निर्धारण किया है. उन्होंने मुख्य वक्ता डॉ राजेन्द्र सिंह का स्वागत करते हुए कहा कि आपने अद्भुत बात कहने समय नहीं लगाया लेकिन इसे जीने में पूरा जीवन लगा दिया है. श्री नागर ने कहा कि हकीकत में यह विचार मंथन है. विचार मंथन से अमृत निकलता है.

प्रकृति से पक्षपात यानी भगवान से पक्षपात : गुर्जर

ज्ञान सिंह गुर्जर,
भाजपा जिलाध्यक्ष

ब्यावरा. जिला भाजपाध्यक्ष ज्ञान सिंह गुर्जर ने अपने उद्बोधन में कहा कि सभी वक्ताओं ने अपने ज्ञान और विवेक से हमें दिशा, दर्शन दिया है. प्रकृति को पंच भूतानी यानी भगवान माना जाता है .बिना किसी पक्षपात से प्रकृति को भगवान मान लेना और प्रकृति के साथ जुड़ना यानी ईश्वर के साथ जुड़ना होता है. हम प्रकृति से दूर हो रहे है इसलिए विश्व में ये परिस्थितियां उपजी है. इससे उबरने के लिए हमें अपनी दैनिक जीवन में दिनचर्या को बदलना होगा. हमारे मनीषियों ने अपने पुरूषार्थ से इस प्रकृति को पल्लवित किया. हमें इनके ऋणी है. श्री गुर्जर ने कहा कि देश हमें देता है सबकुछ हम भी तो कुछ देना सीखें. हम सभी को वक्ताजनों की बात को जीवन में उतारना चाहिए.

धरती साक्षात जगदम्बा, इसे नाराज ना करें : मोहन शर्मा

मोहन शर्मा
विधायक, नरसिंहगढ़

ब्यावरा. नरसिंहगढ़ क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक मोहन शर्मा ने अपने उद्बोधन का प्रारंभ भारत माता की जय उद्घोष के साथ किया. उन्होंनें कहा कि हमें जैविक खाद और खेती पर जोर देना चाहिए. आने वाली पीढ़ी के लिए हम सभी को जैविक और वैदिक चीजों पर लौटना होगा. हम दूध, घी जो खा रहे है वह जहर के समान है. प्रकृति से छेड़छाड ना करें. प्रकृति से जबजब छेडछाड की तब तब तबाही आई है. उन्होंने कहा कि प्रकृति आदिशक्ति जगदम्बा के समान है. उसे नाराज नहीं करें अन्यथा बुरे परिणाम भुगतने होंगे. उन्होंने कहा कि प्रकृति के उऊपर काफी चर्चाएं हो चुकी है. सभी ने हमें राह दिखाई है. डॉ राजेन्द्र सिंह ने सनातन को लेकर सुंदर व्याख्या की है.

अज्ञानता का अंधकार सतत् दूर कर रहा नवभारत

चंदर सिंह सौंधिया,
जिपं अध्यक्ष, राजगढ़

नवभारत का लगातार 26 वर्षो से विचार मंथन का यह आयोजन अपने आप में अद्वितीय है. यह आयोजन क्षेत्र के उन लोगो का जो गंभीर विषयों पर चिंतन नहीं कर पाते है. जो ज्वलंत विषयों पर अज्ञानता के कारण अनभिज्ञ है,उनमें अज्ञानता का अंधकार दूर करने का कार्य कर रहा है. इसके लिये नवभारत परिवार बधाई का पात्र है. हमारी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों में पर्यावरण, प्रकृति के प्रति प्रेम चिरकाल से चला आ रहा है. स्वार्थ, महत्वाकांक्षा और आगे बढ़ने की होड़ से पर्यावरण का नुकसान हुआ है. इसका मूल कारण अर्थ की प्राप्ति अर्थात लक्ष्मी जी है. इससे सद्भावना, प्रेम समाप्त हो जाता है. हमें अगर प्रकृति से प्रेम करना है तो व्यक्तिगत स्वार्थ को भूलना होगा. आपने चुनाव में खर्च कम करने के सुझाव का भी समर्थन किया.

महंगे चुनावों से प्राप्त सत्ता पर्यावरण के लिए नुकसानदायक

हृदयेश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली

न्यूनतम आवश्यकता, कम खर्च, विलासिता मुक्त प्रवृति कई प्रकार के खतरों से बचाती है. अगर मनुष्य अपनी आवश्यकता को कम करता है मतलब वह संसाधनों का उपयोग भी कम करता है और उतना ही बेहतर पर्यावरण की मदद करता है. दुर्भाग्य यह है कि इस दुनिया में आजकल पर्यावरण को सबसे अधिक खतरा महंगे चुनाव और फिर उससे प्राप्त होने वाली सत्ता से है.

चुनाव में होने वाला खर्च कोई दल अथवा व्यक्ति नहीं करता है, दल से लाभ लेने की अपेक्षा करने वाला ठेकेदार, कार्पोरेट, पूंजीपती करता है. फिर वह उस दल को सत्ता दिलाने में मदद कर इसकी कीमत वसूलना शुरू करता है. परिणाम स्वरूप वह संसाधनों का दोहन बेतरतीब करता है. इसी से पर्यावरण को सर्वाधिक क्षति होती है.

पर्यावरण हो या अन्य कोई विषय सरकार सब कुछ कर सकती है. सरकारें इन्हीं वादों के साथ सत्ता में आती भी है. लेकिन सत्ता होती है तो वह अधिक करप्ट हो जाती है. पर्यावरण के दुष्प्रभावों का असर मनुष्य पर उसको होने वाली बीमारियों से पड़ता है और सरकारों का जनस्वास्थ्य का ठांचा चरमराया हुआ है. पेस्टीसाईड को रोकने के कोई कानून नहीं है. 1967 का एक्ट में यह स्पष्ट है कि दो हजार का जुर्माना है.

सरकार ने जनस्वास्थ्य सिस्टम बीमा कंपनी के भरोसे छोड दिया है. जब बीमा करवाते है तो आप बड़े अस्पताल के चक्कर में उलझ जाते है. अस्पतालों में सुविधाएं नहीं है, अच्छे डॉक्टर नहीं है. बीमा कंपनी के चक्कर में बड़े अस्पताल में उलझने को मजबूर हो जाते है.

पर्यावरण बचाने का मतलब विकास में बाधा नहीं

पर्यावरण को बचाने का मतलब विकास के रास्ते में बाधा खड़ा करना नहीं है. 25 साल की सॉलिड रिसर्च के आधार पर मैं बता सकता हूं कि पर्यावरण के प्रति आज अगर आप एक रुपया लगाते हैं तो सात गुना अगले दिन डिजास्टर होने से रोकने के लिए बचाते हैं.

पर्यावरण का मामला विकास का विरोध करना नहीं है. यह आने वाली पीढ़ी बचाने का मामला है. इसके दुष्परिणामों से होने वाली विनाशलीला के खतरे को समय रहते समझने और उसके समावेशी हल खोजने की जरूरत है. धरती का तापमान बढ़ रहा है. डेढ़ डिग्री बड़ा. अब नीचे नहीं जायेगा. ग्रीन एनर्जी का उपयोग करेंगे तो ही पारा नीचे जायेगी. जितना संसाधन का उपयोग करते है उतना ही पर्यावरण का नुकसान होता है. पर्यावरण के लिये उपदेश देना आसान है लेकिन उसपर प्रेक्टिस करना मुश्किल है.